International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 119-120

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में पाश्चात्य सभ्यता

डॉ. शैलेष वी

अतिथी प्रअध्यापक , डि.बी. कॅलेज, शास्ताँकोट्टा

प्रस्तावना

आधुनिक युग में पाश्चात्य विचार धारा नारी जीवन मूल्यों में परिवर्तन का कारण बनी है। विदेशी भारत छोड़कर चले जाने पर भी उनकी संस्कृति का प्रभाव आज भी हमारे देश की नारी के मानस पडल पर दिखाई देती है। कमज़ोरी के कारण मध्यवर्गीय नारी अपनी परंपरागत मान्यताओं को त्यागती है, नवीन चेतना से प्रभावित होकर पाश्चात्य जीवन दर्शन को स्वीकार करना चाहती है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण नारी के प्रेम संबन्धी दृष्टिकोण भी बदल गया है। कपडे बदलने के तरह नारी प्रेमी को भी बदलती है। नारी के लिए विवाह एक बन्धन हो गया है। वह अपने को इस बन्धन में बाँधना नहीं चाहती थी। आज नारी में मातृत्व के कर्तव्य के प्रति उदासीनता भी पनप रही है। वह अपने मांसल शरीर के नग्न प्रदर्शन के प्रति आकृष्ट हो रही है। उषा प्रियंवदा की नारियाँ भी भारतीय एवं पाश्चात्य सभ्यता से भरपूर अपनी जिन्दगी को आगे बढाने में संघर्षरत है।

उषा प्रियंवदा की 'रुकेगी नही राधिका' उपन्यास की राधिका भी ऐसी ही नारी है जो पाश्चात्य जीवन प्रणाली को अपनाकर जीना चाहती है। अपनी आयू के हर एक छात्र की तरह राधिका का भी विदेश भ्रमण का एक स्वप्न था। अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए वह डैन के साथ चली जाती है। घर के चार दीवारों के अंदर रहनेवाली नारी परिवारवालों को छोडकर किसी पुरुष के साथ अन्य देश में चला जाना पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण है।

भारतीय समाज में बिना शादी किए भी लडकी अन्य पुरुष के साथ रहना सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने के समान है, लेकिन विदेश में इस प्रकार करने में कोई खतरा नहीं। इस तरह डैन के साथ चली जाकर और उनके साथ रहकर भी राधिका वह समाज के नियमों को तोडती है। डैन तथा अन्यअनेक पुरुषों के साथ-साथ रहकर भी राधिका समाज के नियमों को तोडती है। 'पार्टियों' में नारियों का भागीदारी का कारण भी पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव है। नारी दिन या रात में पार्टियों में चले जाने को हिचकती नहीं है। राधिका भी मनीश के घर में पार्टि के लिए चली जाती है। पार्टि में शराब का उपयोग भी वह करती है।आधुनिक नारी सभी क्षेत्र में पुरुष का अनुकरण करना या आगे बढना चाहती है।

पढ़ी-लिखी राधिका विदेश जाने पर विदेशी संबन्धों के बारे में सोच विचार करती है। वह सोचती है - ''कैसा होगा वह देश जहाँ लोग इतनी आसानी से साथी बदल देते हैं, क्या रिक्ति हृदय में कचोटती नहीं रहती? वह पापा को ही क्षमा नहीं कर पायी।''1 अठारह साल अपने अकेलापन झेलनेवाले पिता जब विद्या को विवाह किया, तब राधिका प्रतिशोध से मुखरित होकर घर छोडकर चली आयी। किन्तु विदेश में रहते समय पाश्चात्य एवं भारतीय सभ्यता की तुलना में अपने पिता से माँफी माँगना उसे अनिवार्य हो गया।

पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होने पर भी आदर्श भारतीय नारी को देश के प्रति प्रेम होना स्वाभाविक है। ''प्रतिभाशील, मननशील राधिका में भारतीय संस्कृति के प्रति मोह है। उसके जीवन की मान्यताओं को ठेस लगती है। इसलिए वह अतीत को भूलना चाहती है। वह पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है पर यहाभाव कहीं भी उसके व्यक्तित्व पर थोपा हुआ सा प्रतीक नहीं होता। वह बस वहीं तक ही जहाँ तक उसका व्यक्तित्व उसे ग्रहण कर सका है। इसलिए उसके विचारों में गांभीर्य है।''2 मनीष के घर की औपचारिक पार्टि में हमें भारतीय पाश्चात्य परिवेश दिखाई देता है। जिसमें राधिका भारतीय नागरिक होने के कारण अपने देश की अस्मिता का जबरदस्त बचाव करती हुई कहती है - ''वैसे हर देश में ऐसी बुराईयाँ ढूँढने से मिल जाती है। शिकाओं का पुअर सेक्शन आपने देखा ही होगा, वहाँ स्कूलों और कॉलेजों में नैतिकता का जो स्तर है वह भी आपको मालूम ही है।''3 पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नारी आज अपने को केवल दिखावट करने का चीज़ समझती है। आपना ज्यादा शरीर बाहर दिखाना ही लक्ष्य मानकर वह आज कपडा कस कर दिया है। उषा प्रियंवदा लिखती है - ''प्रेमा भी अपनी ओर से काफी सज्जीत थीं, तरबूजी नायलॉन की साड़ी, ठण्ड में भी बिना बाहों का ब्लाउज।''4 आज समाज में नारी 'मेकअप' की दुनिया में फँस गयी है। वह आज 'मोडल' बनना चाहती है। यह तो पाश्चात्य सभ्यता का देन है।

'शेषयात्रा' में अनु को प्रणव की अमेरिकी सभ्यता का परिणाम भोगना पडता है। प्रणव ऐसे व्यवहार करता है ठीक उसी तरह अनु को करने के लिए कहता है। सखी सम्मेलन में अनु शादी के बाद ही सम्मिलित कर ली गयी थी। अनु को पाश्चात्य चकाचौंक, औपचारिक सम्बन्ध, खोखला दिखावा, यह सब देखकर थोड़ा-सा तज्जुब होता है, क्योंकि उसके भीतर गहरे से भारतीय संस्कृति जमे पड़ें है।पाश्चात्य परिवेश से अनु में भी थोडा सा परिवर्तन आयी। वह भी 'फैशन' की ओर चली गयी। उसे हुआ कि शिफन की जगह उसे रेशम अच्छा लगता है। नारंगी और पीले रंग की बजाय मैंगनी और हरा। फूल पत्नी की छाप की जगह ज्यमिती की सी रेखाएँ। पैसा बचाने की जगह खर्च करना अच्छा लगता है। उदास होने पर पराठे और आलू खाने का मन करता है। विदेश में रहने के कारण नारी को स्वाभाविक ढंग से विदेश की सभ्यता की कुछ अनुकरण करना स्वाभाविक है। अनु में भी यह हुआ है। लेकिन अनु का यही परिवर्तन भारतीय आदर्श के विरुद्ध नहीं है। अनु को यह संदेह है कि अपना दुःख किसी से कहूँ? वह शराब पीकर रोना चाहती है। तब प्रणव उससे कहता है - ''आज पीने का क्या

शौक चर्चाया था? लोग पीकर खुश होते हैं, आप रो रही है।'' 5 लेकिन यह शराब पीना उसकी शौक बन गयी है पहले जो दुःख के अवसर पर पीती है तो फिर खुशी के अक्सर पर भी अनु शराब का उपयोग करने लगा। अनु ने शादी के दिन पीना देखकर दीपांकर पूछते है कि दुलहिन रानी नवरस हैं क्या है।''6 उषा प्रियंवदा ने सुख दुःख एवं संघर्ष के अवसर पर शराब का सहारा लेनेवाली नारी का चित्रण किया है।

नारी अपने शरीर का दिखावड करने में हिचकते भी नहीं है। यह देखने वालों को भी शर्मा होना स्वाभाविक है। अनु जब किरात के घर में पहूँचती है तो किरात की लडकी ने दरवाजा खोला। लेकिन उसकी वेषभूषा अनु के मन में भी शर्म पैदा करने लायक थी। ''वह बिना बटन का, गहरे पिंक रंग का हाउसकोट पहने हुए थी, बाल भुच्चा, चेहरे पर चिकनाई। अनु को देखकर उसने कोई खुशी या कोई गरमाई नहीं व्यक्त की। अनु के अंदर आ जाने पर वह दरवाज़ा बन्द करके बिना कुछ कहे अपने कमरे की ओर चली गई। उसका बिना बटनों वाला हाऊसकोट आगे खुल गया। वह एक सत्ता-सा, एकदम पारदर्शी नाइट गाउन पहने थी, जिसमें से उसका शरीर साफ चमक रहा था। अनु झटका-सा खाकर दूसरी ओर देखने लगी।''7

अंतर्वंशी' में उषा प्रियंवदा ने दो संस्कृतियों के बीच के संघर्ष से उत्पन्न पीडादायी जीवन जीनेवाली वाना का चित्रण किया है। 'वाना' भारत से विदेश आनेपर अपनी परिवेश के अनुरूप नाम में भी परिवर्तन लाने की स्थिती में आ गयी है। वह चुनमुन से बाँसरी, बाँसरी से वनश्री और अंत में अमेरिकन मालकिन ने उसे वाना ही बना दिया है।

वाना अन्य पाश्चात्य स्त्रियों के समान वाइन पीती है। । वह उसकी वेशभूषा में भी यह लगाव दिखाती है। वह अपनी शरीर की दिखावट भी करती है। उसे देखकर शिवेश भी ऐसे कहते है ''यह सब क्या है वाना? इतनी ऊँची सी स्कर्ट कसी हुई जैकेट। सारा शरीर नज़र आता है और इतनी सारी लाली''8 शिवेश के प्रति संपूर्ण रूप से समर्पित वाना उसके अभाव में राहुल के साथ संबन्ध जोडती है। उसके प्रेमी राहुल के बच्चे को जन्म लेने का निर्णय भी वह करती है।

'भया कबीर उदास' की लिली पी.एच.डी करने के लिए अमेरिका गयी थी। वातावरण का प्रभाव उधर रहनेवाले व्यक्ति में होते है। लिली भी इससे भिन्न नहीं। वह भी पार्टीयों में जाती थी और शराब भी पीती थी। उषा प्रियंवदा की अधिकांश नारी पात्र विदेशी धरती पर गयी थी । ये सब विदेशी धरती पर अपने को आत्मनिर्भर बनाने में सफल हुई है। । लेकिन विदेश में रहने पर भी उसको अपने देश के प्रति प्रेम भाव थी, वही उनकी नारियों में भी पायी जाती है।

संदर्भ

1. उषा प्रियंवदा - रुकेगी नहीं राधिका- पृ. 26
2. डॉ. स्वर्णलता - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाज शास्त्रीय पृष्ट भूमी - पृ. 61
3. उषा प्रियंवदा - रुकेगी नयी राधिका - पृ. 79
4. वही - पृ. 53
5. उषा प्रियंवदा - शेषयात्रा - पृ. 61
6. वही - पृ. 160
7. वही - पृ. 37
8. 8. उषा प्रियंवदा - अंतर्वंशी - पृ. 130